Sursundari Yakshini Mantra Sadhana

सुरसुन्दरी यक्षिणी मंत्र साधना एवं सिद्धि

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

Shri Raj Verma ji

Mobile- 09897507933, 07500292413

ब्रह्माण्ड में ही असंख्य ब्रह्माण्ड, लोक एवं शक्तियां विद्यमान हैं। जिनसे मंत्र एवं ध्यान के माध्यम से सम्बन्ध स्थापित कर उनके रहस्यों को जाना जा सकता है। इन सभी में भिन्न भिन्न गुणों की प्रधानता पायी जाती है। जैसे- पिशाचलोक में पार्थिव गुण, राक्षसलोक में जल सम्बन्धी गुण, यक्षलोक में तेजसम्बन्धी गुण, गन्धर्वलोक में वायुसम्बन्धी गुण, इन्द्रलोक में व्योमात्मक अर्थात् आकाशसम्बन्धी गुण, सोमलोक में मन सम्बन्धी गुण, प्रजापतिलोक में अंहकार सम्बन्धी गुण तथा ब्रह्मलोक में सर्वोत्तम बोधगुण कहे गये हैं। यहां पर केवल यक्षलोक सम्बन्धी तैजस गुणों का वर्णन किया जा रहा है।

यक्षलोक सम्बन्धी चौबीस गुण- शरीर की स्थूलता, ह्रस्वता, बालकपन, वृद्धता, यौवन, अनेकविध रूप धारण करना, बिना पार्थिव अंश के चार तत्त्वों से देह धारण करना तथा नित्य सुगन्धित रहना, पृथ्वी पर रहने की भांति जल में निवास करना,

उससे बाहर आने की सामर्थ्य रखना, इच्छा होने पर स्वयं समुद्र का पान करने में समर्थ होना, इस जगत् में जहां भी इच्छा करे, वहां जल का दर्शन कर लेना, जिस-जिस वस्तु का भक्षण किया जाये, उसे अपनी इच्छा के अनुसार रसयुक्त बना देना, तेज, वायु, आकाश- इन तीनों से देह धारण करना, बिना पात्र के हाथ से जलपिण्ड का धारण करना तथा शरीर में व्रण आदि का न होना, देह से अग्नि का निर्माण, अग्नि के ताप का भय न होना, दग्धलोक को भी अपने योगविधान से अदग्धतुल्य अर्थात् पूर्ववत् कर देना, जल के भीतर अग्नि स्थापित करके उसे वैसे ही बनाये रखना, हाथ से आग पकड़ लेना, स्मरण मात्र से अग्नि प्रकट कर देना, भस्म हुए पदार्थ को इच्छापूर्वक पहले की भांति कर देना तथा पृथ्वी, जल, तेज के बिना ही दो तत्त्वों अर्थात् वायु और आकाश से अपनी देह धारण करना- ये चौबीस गुण वाले तैजस ऐश्वर्य हैं। उपास्य देवता के प्रभाव से साधक में भी शनैः शनैः देवता के गुणों का उदय होने लगता है।

स्थूणाकर्ण नामक यक्ष ने शिखण्डिनी को अपना तेजस्वी पुरुषत्व देकर उसका स्त्रीत्व ग्रहण कर उस पर उपकार किया था। जिसके कारण शिखण्डिनी भीष्म का वध कर पायी थी। इसी प्रकार यक्ष

एवं यक्षिणियों की पुराणों एवं शास्त्रों में कई स्थानों पर चर्चा मिलती है। प्रेम, लग्न और विवेक के माध्यम से हिंसक प्रवृत्ति के जीवों को भी अपने वश में किया जा सकता है, फिर ये तो उपदेवता की श्रेणी में आते हैं। इनकी कृपाशक्ति से मनुष्य असम्भव कार्यों को सहजता से सिद्ध कर स्वयं एवं जगत् कल्याण कर सकता है, परंतु एक दुर्लभ सिद्धि को प्राप्त करना जितना कठिन होता है, उससे भी कठिन होता है, उसको अपने पास सुरक्षित बनाये रखना। राजा की पदवी पर बैठने का मतलब है, एक बड़ी जिम्मेदारी से उसका निर्वाह करना। स्वकल्याण एवं जनकल्याण की सुदृढ़ भावना जिसके हृदय में प्रकाशित हो, उस श्रेष्ठ साधक के समक्ष ये शीघ्र प्रकट हो जाती हैं, इसके विपरित जिसके हृदय में भोग, विलास, ख्याति अथवा दुरुपयोग करने की भावना हो, उन्हें इनका साक्षात्कार नहीं होता है। इनकी साधना के अन्तर्गत साधक को रात्रिकाल में घुंघरु की छम-छम की ध्वनि सुनाई देना, कभी एक दिव्य प्रकाश का दिखना, साधनास्थल का परम् सुगन्धित हो जाना या स्वप्न या सुषुप्तावस्था में तेजयुक्त, रूपवान स्त्री के दर्शन होना आदि का अनुभव होता है। सभी साधकों की साधनाकाल में भिन्न-भिन्न परीक्षाएं एवं अनुभूतियां

होती हैं। किसी को एक माह में, किसी को एक वर्ष में, तो किसी को इससे भी अधिक समय में इनका प्रत्यक्षीकरण होता है। यह अपनी-अपनी भाग्यदशा, पूजाविधि, योग्यता एवं भावना पर निर्भर करता है, अगर एक माह में ही इनकी सिद्धि होने लगे तो हर मनुष्य इस दुर्लभ सिद्धि का स्वामी बन जायेगा, जिससे इसका कोई महत्व ही नहीं रह जायेगा। जैसा कि कई पुस्तकों और इन्टरनेट पर इनकी सिद्धि का एक निश्चित समय बताया गया है। वास्तव में एक अच्छा उपासक, जो इनका सदुपयोग करने में सक्षम हो, उसी महापुरुष को इनकी सिद्धि होती है। तंत्रशास्त्र में भगवान् शिव, देवी पार्वती को यक्षिणी साधना सम्बन्धित जो तंत्रज्ञान प्रदान करते हैं, उसका वर्णन इस प्रकार है।

देवी बोली- हे ईश्वर! यक्षिणि साधन किस समय एवं किस विधि से करनी चाहिये? इस साधना का क्या महत्त्व है एवं इस साधना के अधिकारी कौन हो सकते हैं? संक्षेप में बताने की कृपा करें।

ईश्वर बोले- हविष्याशी और जितेन्द्रिय होकर विधिवत् शुभ काल में यह दुर्लभ साधनारम्भ करनी चाहिये। सदैव ध्यान में लीन एवं उसके दर्शन की अभिलाषा में उत्सुक होकर निर्जन एवं सर्वथा

सुनसान प्रदेश में धैर्यपूर्वक यह साधना आरम्भ करनी चाहिये। इस प्रकार साधना करने से निःसन्देह देवी का साक्षात्कार प्राप्त होता है एवं मनुष्य को अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। देवी का साधक ही इस साधना का अधिकारी है, क्योंकि यक्षिणियां एवं योगिनियां भगवती जगदम्बा की सेविकायें एवं सखियां हैं। जो ब्रह्मविद् हैं, उन्हें इस साधना का अधिकार नहीं है। सर्व यक्षिणियों का ध्यान शान्तचित्त होकर करना चाहिये। इनके सिद्ध हो जाने पर साधक की सर्व अभिलाषायें पूर्ण होती हैं।

छत्तीस प्रमुख यक्षिणियों के नाम इस प्रकार हैं– विचित्रा, विभ्रमा, हंसी, भिक्षिणी, जनरंजिका, विशाला, मदना, घण्टा, कालकर्णी, महाभया, माहेन्द्री, शंखिनी, चान्द्री, श्मशानी, वटयक्षिणी, मेखला, विकला, लक्ष्मी, कामिनी, शशपत्रिका, सुलोचना, सुशोभाढ्या, कपाली, विलासिनी, नटी, कामेश्वरी, स्वर्णरेखा, सुरसुन्दरी, मनोहरा, प्रमोदा, रागिणी, नखकेशिका, नेमिनी, पद्मिनी, स्वर्णवती, रातिप्रिया।

ये प्रमुख सुसिद्धिप्रदा 36 यक्षिणियां हैं। 'किंकणी–तंत्र' में शिव ने स्वयं इसे कहा है। साधना उपरान्त् यदि इन यक्षिणियों में से कोई भी प्रकट न हो तो क्रोधपूर्वक क्रोधमंत्र का जप करना चाहिये।

'ॐ जूं कट्ट-कट्ट अमुकयक्षिणी ह्रीं यः यः हुं फट्।' इस मंत्र के जप से यक्षिणी आकर्षित होकर शीघ्र साधक के समक्ष उपस्थित हो जाती है और न आने पर उसकी आंख या मूर्धा फट जाती है या तत्काल मर जाती है अथवा महानरक में गिर जाती है। क्रोधमंत्र का प्रयोग मनुष्य तब करे, जब मनुष्य विधिवत् पर्याप्त संख्या में इनके जप कर चुका हो। यहां सर्वोत्तम यक्षिणी सुरसुन्दरी साधना का प्रयोग दिया जा रहा है।

संक्षिप्त साधना विधि- शुभ काल या तिथि में स्नानादि से निवृत्त होकर गुरु, गणेश एवं इष्ट पूजन करें। 'ॐ सहस्रार हु फट्' मंत्र से दिग्बंधन करें। मूलमंत्र से तीन बार प्राणायाम करके मंत्र से षडंगन्यास करें-

ॐ हृदयाय नमः। ॐ आगच्छ शिरसे स्वाहा। ॐ सुर शिखायै वषट्। ॐ सुन्दरि कवचाय हुम्। ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा अस्त्राय फट्।

रक्तपुष्प हाथ में लेकर देवी का ध्यान करें- पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम्।।

Shri Raj Verma ji
Mobile- 09897507933, 07500292413

ध्यान के पश्चात् धूप, दीपक, नैवेद्य के साथ नाना प्रकार की उत्तम सामग्रियों से देवी की पूजा करें। आत्मरक्षा कवच करते हुए मंत्र जपारम्भ करें। एकलिंग, सिद्ध तीर्थ-स्थल, प्राचीन शक्ति या भैरव मन्दिर, गंगातट या गृह-मन्दिर इनमें से जो एकान्त और सुगम हो, वही श्रेष्ठ साधना स्थल है। इस गोपनीय साधना को प्राणप्रतिष्ठित यक्षिणी यंत्र की स्थापना कर सम्पन्न किया जाता है। कुबेर भगवान् यक्षों के स्वामी कहे जाते हैं, प्रारम्भ में उनकी पूजा अनिवार्य है। पूजन कर इस प्रकार प्रतिदिन तीनों संध्याओं में तीन हजार मंत्र जप करें। 41वें दिन उत्तम बलि प्रदान करते हुए शक्कर, गुग्गुल और घी से होम करें। इस प्रकार साधना सम्पन्न करने से रात्रिकाल में सुरसुन्दरी देवी साधक के समक्ष प्रकट होती है। देवी का साक्षात्कार होने पर पाद्यादि, चन्दन, पुष्प, नैवेद्य एवं उत्तम सामग्रियों से उनकी पूजा करे। इस प्रकार पूजन से संतुष्ट होने पर देवी मनुष्य से पूछती हैः तू क्या चाहता है? तब साधक अपना अभीष्ट कहे। देवी के प्रति साधक को माता, बहन या पत्नी की भक्ति की भावना रखनी चाहिये।

देवी की माता के रूप में प्राप्ति होने पर साधक को धन, यश, द्रव्य, मान-सम्मान के साथ सर्व सुख प्राप्त होता है। वह नित्य

साधक को अमूल्य वस्तुएं प्रदान करती है एवं पुत्र की भांति पालन करती है। बहन के रूप में देवी को सिद्ध करने से वह नित्य धन एवं दिव्य वस्तुएं लाकर देती है तथा भाई के समान ध्यान रखती है। पत्नी के रूप में सिद्ध करने पर वह मनुष्य संसार का राजा होता है। उसकी गति स्वर्ग और पाताल तक हो जाती है। पत्नी के रूप में प्राप्ति होने पर मनुष्य अन्य स्त्री का स्पर्श नहीं कर सकता। अन्य स्त्रीगमन करने से साधक निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है। अष्टमी तिथि को कुमारी पूजन, भूमि शयन तथा नमक खटाई से रहित एक ही समय में भक्ष्य भोजन ग्रहण करना चाहिये।

एकादशाक्षर मंत्र– "ॐ आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।"

द्वादक्षर मंत्र– "ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।"

त्रयोदशाक्षर मंत्र– "ॐ आगच्छागच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।"

त्रयोदशाक्षर मंत्र– "ॐ नमो आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।"

Shri Raj Verma ji
Mobile- 09897507933, 07500292413

विशेष– प्राचीन तंत्र ग्रन्थों में इस प्रकार की आकर्षित करने वाली कई साधनायें वर्णित हैं, जिसे लोभवश मनुष्य सिद्ध करना चाहता है, परन्तु इन सिद्धियों को सिद्ध करना इतना सरल कार्य नहीं है। साधक का प्रारब्ध, योग्यता, नित्यकर्म, दैवीयपरीक्षा एवं जप का मूल्यांकन करने के पश्चात् गुरुकृपा से ही साधक को इस प्रकार दिव्य सिद्धियां हासिल होती हैं। जैसा कि तंत्रों में लिखा है कि पत्नी के रूप में सिद्ध होने पर मनुष्य अन्य स्त्रीगमन नहीं कर सकता, क्योंकि वह अपने अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं देख सकती। इसी प्रकार माता या बहन के रूप में सिद्ध होने के पश्चात् भी माता या बहन से सम्बन्ध समाप्त करना पड़े या उनका स्वास्थ्य खराब हो जाये अथवा अन्य संकट उत्पन्न हो जाये, इन सब तथ्यों पर विचार करना अनिवार्य है। इस साधना को एक उच्चकोटि साधक जो किसी महाविद्या और भगवान् भैरव के पर्याप्त संख्या में जप कर चुका हो, शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत हो, उसे ही इस साधना में प्रवेश करना चाहिये, सामान्य कमजोर प्रवृत्ति के साधक इस प्रकार की साधनाओं से दूर रहें। उच्चकोटि साधक को किसी प्रकार का भय या हानि होने की

सम्भावना नहीं रहती है और यक्षिणी का साक्षात्कार भी शीघ्र हो जाता है।

मुझसे ऐसे कई लोगों ने सम्पर्क किया, जिन्होंने यक्ष–यक्षिणी, पिशाचिनी एवं अन्य क्षुद्र साधनायें अपनी सूझबूझ के बिना किसी गुरु के अभाव में स्वयं ही करने का प्रयास किया। फलस्वरूप उनको कई विकट समस्याओं से झूंझना पड़ा। कुछ लोगों को ऐसे संकटों का सामना करना पड़ा, जिसका मैं उल्लेख भी नहीं कर सकता। कई जगह भटकने के बाद वे मुझसे मिले। मैंने भी बहुत कठिनाईयों से उन्हें संकट से बाहर निकाला। इसलिये इस प्रकार की साधनायें केवल अपनी सूझ–बूझ से करने का प्रयास कदापि ना करें। अनुभवी गुरु से परामर्श कर शुभाशुभ की जानकरी लेकर ही इस साधना में प्रवेश करना चाहिये। इस प्रकार की साधनाओं में गल्ती होने पर क्या मूल्य चुकाना पड़े यह कहना सम्भव नहीं है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

Shri Raj Verma ji
Mobile- 09897507933, 07500292413

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

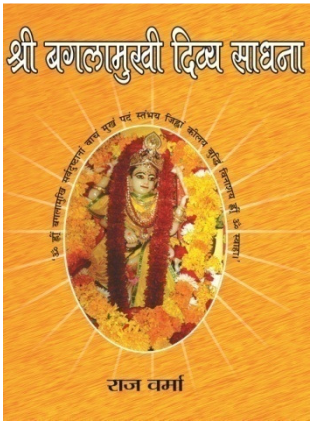

Shri Raj Verma ji
Mobile- 09897507933, 07500292413